हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. हिन्दी - चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम शीर्षक - हिन्दी साहित्य की किसी एक विधा का विशेष अध्ययन

जा चुका है इसलिए वर्तमान में इस पाठ्यक्रम के तहत निबंध विधा का अध्ययन-अध्यापन

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार

मूल्यांकन मापदंड :	**क) मध्यावधि परीक्षा -**	**25%**
	ख) सत्रांत परीक्षा -	**50%**
	ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	**25%**
	***पुस्तकालय कार्य -**	**5%**
	***प्रायोगिक कार्य -**	**5%**
	***गृह-कार्य -**	**5%**
	*** कक्षा परीक्षा -**	**5%**

*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. हिन्दी - चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत: एच.आई.एल 449 **क्रेडिट- 4**

पाठ्यक्रम शीर्षक - हिन्दी साहित्य की किसी एक विधा का विशेष अध्ययन

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 हिन्दी निबंध का उद्भव और विकास

क) निबंध : अर्थ एवं स्वरूप

ख) निबंध के प्रकार एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ग) निबंध लेखन की विविध शैलियाँ

घ) हिन्दी नवजागरण एवं हिन्दी निबंध की पृष्ठभूमि

ङ) हिन्दी निबंध साहित्य का काल-विभाजन

च) हिन्दी निबंध की क्रमिक विकासयात्रा

इकाई-2 हिन्दी निबंध का प्रथम चरण : भारतेंदु युग

क) भारतेंदु युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख निबंधकार

ख) निबंधकार के रुप में भारतेंदु का योगदान

ग) भारतेंदु के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा

(चयनित निबंध - 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन')

घ) निबंधकार के रुप में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

ङ) बालकृष्ण भट्ट के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा

(चयनित निबंध - 'कर्तव्यपरायणता')

इकाई-3 हिन्दी निबंध का द्वितीय चरण : द्विवेदी युग

क) द्विवेदी युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख निबंधकार

ख) निबंधकार के रुप में बालमुकुन्द गुप्त का योगदान

ग) बालमुकुन्द गुप्त के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा

(चयनित निबंध - 'राजभक्ति')

घ) निबंधकार के रुप में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का योगदान

ङ) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'मारेसि मोहिं कुठाऊँ')

इकाई-4 हिन्दी निबंध का तृतीय चरण : शुक्ल युग

क) शुक्ल युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख निबंधकार

ख) निबंधकार के रुप में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान

ग) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'उत्साह')

घ) निबंधकार के रुप में सियारामशरण गुप्त का योगदान

ङ) सियारामशरण गुप्त के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'घोड़ाशाही')

इकाई-5 हिन्दी निबंध का चतुर्थ चरण : शुक्लोत्तर युग

क) शुक्लोत्तर युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख निबंधकार

ख) निबंधकार के रुप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान

ग) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'अशोक के फूल')

घ) निबंधकार के रुप में विद्यानिवास मिश्र का योगदान

ङ) विद्यानिवास मिश्र के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है')

च) निबंधकार के रुप में कुबेरनाथ राय का योगदान

छ) कुबेरनाथ राय के निबंध का पाठ-विवेचन एवं समीक्षा
(चयनित निबंध - 'हेमंत की संध्या')

आधार ग्रन्थ :

1.सत्यप्रकाश मिश्र (सम्पादन) भारतेंदु के श्रेष्ठ निबंध

2. सत्यप्रकाश मिश्र (सम्पादन) बालकृष्ण भट्ट के श्रेष्ठ निबंध

3. सत्यप्रकाश मिश्र (सम्पादन) बालमुकुन्द गुप्त के श्रेष्ठ निबंध

4. निर्मला जैन (प्रधान सम्पादक) निबंधों की दुनिया
पंडित चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल चिंतामणि (पहला भाग)

6. विद्यानिवास मिश्र मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

7. कुबेरनाथ राय प्रिया नीलकंठी

संदर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. विभुराम मिश्र एवं डॉ.ज्योतीश्वर मिश्र प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार

2.डॉ. सुमिता लोहिया हिन्दी के ललित निबंध

3. डॉ. पीयूष गुलेरी श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी :व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.डॉ. कृष्णदेव शर्मा अशोक के फूल समीक्षा

5. डॉ. वेदवती राठी हिन्दी ललित निबंध स्वरूप विवेचन

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. हिन्दी - चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम शीर्षक - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 444 (HIL 444) **श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का उद्देश्य एम .ए (हिन्दी) के विद्यार्थियों को स्वतंत्रता के बाद कविता के क्षेत्र में आए बदलाव एवं परिवर्तन आदि से रूबरू कराना है जिससे कि स्वतंत्रता के बाद की काव्य परम्पराओं एवं उनके योगदान से उन्हें भली-भांति परिचित कराया जा सके यही नहीं कविता की विभिन्न काव्यधारायें जिस तरह समाज में व्यापक सरोकार के साथ उन्मुख रहीं उनकी विशिष्टता से भी अवगत कराया जा सके |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. हिन्दी - चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम शीर्षक - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 444 (HIL 444) **श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय**

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ (8 घंटे)

क) स्वातंत्र्योत्तर काव्य : राजनीतिक,सामाजिक स्थिति

ख) प्रगतिवादी काव्यधारा

ग) प्रयोगवादी काव्यधारा

घ) नई कविता

ङ) समकालीन हिन्दी कविता

इकाई-2 प्रयोगवादी कविता : कवि एवं रचना-संसार (8 घंटे)

क) अज्ञेय का काव्यगत विकास,अज्ञेय की काव्य-दृष्टि, अज्ञेय और प्रकृति,अज्ञेय का भाषा-शिल्प

ख) मुक्तिबोध के काव्य में मनोविज्ञान,अस्तित्ववाद,मार्क्सवाद का प्रभाव

ग) मुक्तिबोध की सौन्दर्यानुभूति,मुक्तिबोध का शब्द कर्म,मुक्तिबोध का भाषा-शिल्प

घ) अज्ञेय की कविताओं का पाठ

ङ) मुक्तिबोध की कविताओं का पाठ

इकाई-3 नई कविता : कवि एवं रचना-संसार (8 घंटे)

क) मुक्तिबोध और नई कविता,शमशेर बहादुर सिंह की कविता में प्रेम

ख) भवानी प्रसाद मिश्र का काव्यगत विकास, प्रेम एवं प्रकृति,इतिहास एवं समाज

ग) रघुवीर सहाय की कविता में राजनीति एवं समाज,रघुवीर सहाय का भाषा-शिल्प

घ) शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का पाठ

ङ) भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का पाठ

च) रघुवीर सहाय की कविताओं का पाठ

इकाई-4 समकालीन कविता : कवि एवं रचना संसार (8 घंटे)

क) त्रिलोचन : काव्यगत विकास,भाषा-शिल्प,त्रिलोचन के सानेट

ख) नागार्जुन : काव्यगत विकास,भाषा-शिल्प

ग) केदारनाथ सिंह : काव्यगत विकास,ग्रामीण संवेदना

घ) त्रिलोचन की कविताओं का पाठ

ङ) नागार्जुन की कविताओं का पाठ

च) केदारनाथ सिंह की कविताओं का पाठ

इकाई-5 समकालीन कविता : चुनौतियां एवं युगबोध (8 घंटे)

क) समकालीनता एवं सर्वकालिकता का प्रश्न

ख) समकालीनता की अवधारणा

ग) समकालीन कविता और सामाजिक यथार्थ

घ) समकालीन हिन्दी कविता की चुनौतियाँ

<u>सम्भावित ग्रन्थ :</u>

<u>आधार ग्रन्थ :</u>

कृष्णदत्त पालीवाल — अज्ञेय रचनावली,खण्ड- 2

भारतीय ज्ञान पीठ, 18 इंस्टीटयूशनल एरिया,लोदी रोड,
नई दिल्ली - 110 003

रघुवीर सहाय — एक समय था

राजकमल प्रकाशन प्रा .लि
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002
पहला संस्करण : 1995

धूमिल — कल सुनना मुझे

वाणी प्रकाशन, 21-ए,दरियागंज नई दिल्ली- 110 002
आवृत्ति : 2010

शमशेर बहादुर सिंह — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स,
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002
पांचवी आवृत्ति : 2005

नागार्जुन — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स,
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002

गोबिन्द प्रसाद (सम्पादन) — केदारनाथ सिंह पचास कविताएँ नयी सदी के लिए
वाणी प्रकाशन,4695,21-ए दरियागंज,नई दिल्ली-110002
प्रथम संस्करण : 2012

<u>सहायक ग्रन्थ :</u>

डॉ. अनंतकीर्ति तिवारी — रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा

विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 1996

डॉ. बृजबाला सिंह — मुक्तिबोध और उनकी कविता
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 2004

डॉ. हरिनिवास पाण्डेय — प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 2000

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. हिन्दी - चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम शीर्षक - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 444 (HIL 444) **श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय**

विशेष कवि का अध्ययन - महाकवि गोस्वामी तुलसीदास

1. Nk=ksa dks rqylhnkl ds O;fDrRo ,oa d`frRo ls ifjfpr djkukA
2. fganh dh HkfDrdkyhu dkO; izo`fŸk;ksa dh tkudkjh nsukA
3. rRdkyhu izeq[k dfo rFkk mudh d`fr;ksa ls ifjfpr djkukA
4. ikB~; d`fr;ksa ds lanHkZ esa leh{kk dh {kerk c<+kukA

इकाई प्रथम

Jhjkepfjrekul ¼ckydk.M½ nksgk & 1 ls 10
¼Jhjkepfjrekul & xhrkizsl, xksj[kiqj½

इकाई द्वितीय

Jhjkepfjrekul ¼mŸkjdk.M½ nksgk & 11 ls 20
¼Jhjkepfjrekul & xhrkizsl, xksj[kiqj½

इकाई तृतीय

dforkoyh ¼izkjafHkd Nan 1 ls 10½
¼dforkoyh & xhrkizsl, xksj[kiqj½

इकाई चतुर्थ

xhrkoyh in& 1 ls 10
¼xhrkoyh & xhrkizsl xksj[kiqj½

इकाई पंचम

fou;if=dk in& 11 ls 20

अनुशंसित ग्रन्थ

1. xksLokeh rqylhnkl & vkpk;Z jkepanz ’kqDy
2. rqylhnkl lkfgR; esa uhfr] HkfDr vkSj n’kZu & MkW gfj’panz ’kekZ
3. rqylh dk dkO; lkSan;Z & MkW jkeewfrZ f=ikBh
4. rqylh dk ekul & eaq’khjke ’kekZ
5. rqylh dkO; n’kZu & MkW- jkeyky flag
6. rqylh lkfgR; lq/kk & MkW- HkxhjFk feJ
7. rqylhnkl % oLrq vkSj f’kYi & MkW vkuanizdk’k nhf{kr
8. fou;if=dk % ,d ewY;kadu & MkW gfj’panz ’kekZ
9. fgUnh vkykspuk vkSj fgUnh uojRu & jktdqekj mik/;k; ef.k
10. yksdoknh rqylhnkl % fo'oukFk f=ikBh
11. rqylh vk/kqfud okrk;u ls % jes'k dqUryes?k
12. rqylh vk/kqfud lanHkksZa esa % MkW HkxhjFk feJ